Resource: अध्ययन नोट्स - पुस्तक परिचय (टिंडेल)

Aquifer Open Study Notes (Book Intros)

This work is an adaptation of Tyndale Open Study Notes © 2023 Tyndale House Publishers, licensed under the CC BY-SA 4.0 license. The adaptation, Aquifer Open Study Notes, was created by Mission Mutual and is also licensed under CC BY-SA 4.0.

This resource has been adapted into multiple languages, including English, Tok Pisin, Arabic (عربي), French (Français), Hindi (हिंदी), Indonesian (Bahasa Indonesia), Portuguese (Português), Russian (Русский), Spanish (Español), Swahili (Kiswahili), and Simplified Chinese (简体中文).

अध्ययन नोट्स - पुस्तक परिचय (टिंडेल)

LUK

लूका

लूका ने यीशु के आगमन को सम्पूर्ण संसार के लिए—प्रत्येक कुल, आयु, लिंग, जातीय समूह, और सामाजिक स्थिति के लिए एक सुसमाचार के रूप में वर्णित किया है। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला उस का पूर्वगामी भविष्यद्वक्ता था, और यीशु परमेश्वर के पुत्र और मसीहा के रूप में आया, वह एक राजा के रूप में दाऊद के वंश से आया, जो शैतान को पराजित करके उद्धार और चंगाई लाया। जैसे-जैसे यीशु ने लोगों की सेवा की और उन्हें शिक्षा दी तथा सुसमाचार का प्रचार किया, धार्मिक अगुवों ने उसका विरोध किया। यीशु एक दुःख उठानेवाले दास के स्वरूप में यरूशलेम गया, एक अपराधी के समान मार दिए जाने से पूर्व उसने उस जाति पर न्याय की घोषणा की, फिर परमेश्वर की योजना को पूरा करने और उसके आत्मा-संचालित उद्देश्य का सारे संसार में प्रारंभ करने के लिए मृतकों में से जी उठा। यह पुनर्जीवित यीशु, यहूदी मसीहा, सारे संसार का उद्धारकर्ता है।

घटनास्थल

लूका को कलीसिया और यहूदी आराधनालय में बढ़ते संघर्ष के संदर्भ में प्रथम शताब्दी के मध्य-से-अंत ई. सन्.के समय में लिखा गया। आरंभिक कलीसिया स्वयं को एक नए धर्म के रूप में नहीं, परन्तु यहूदी धर्म के पूर्ण होने और उसके समापन के रूप में देखती थी। इब्री शास्त्रों (पुराने नियम) में की गई प्रतिज्ञाएँ यीशु मसीह में उसके जीवन, मृत्यु, और पुनरुत्थान के द्वारा पूर्ण हुईं, और उसके बाद आरंभिक कलीसिया के सेवकाई आंदोलन के द्वारा पूर्ण होती रहीं। इस समय के दौरान, अधिक और अधिक अन्यजाति (गैर-यहूदी) कलीसिया में जुड़े, जबकि कई यहूदियों ने सुसमाचार को अस्वीकार भी किया। उन लोगों में विभाजन बढ़ता गया, जो यह मानते थे कि यीशु ही मसीहा है और जो उसे मसीहा नहीं मानते थे।

इस सारे संघर्ष में अहम सवाल यह बन गया कि: परमेश्वर के वास्तविक लोग कौन हैं? क्या वे कलीसिया हैं, जो यीशु ही मसीहा है यह विश्वास करने वाले यहूदियों और अन्यजातियों से मिलकर बनी है? या फिर वो, वे यहूदी हैं, जो यीशु को झूठा मसीहा मानते हुए उसे अस्वीकार करते हैं? लूका इस सवाल को संबोधित करता है और यह दर्शाता है कि वास्तव में यीशु ही वह मसीहा है जो, यहूदी या अन्यजाति, सभी को अपने पास बुलाता है, कि वे उस पर विश्वास करें।

सार

लूका का सुसमाचार एक औपचारिक प्रस्तावना से आरंभ होता है, जो लूका के समय के बेहतरीन यूनानी-रोमी लेखकों की शैली में लिखा गया है (1:1–4)। यह प्रस्तावना लेखक के साहित्यिक कौशल को प्रदर्शित करती है और उसके कार्य का उद्देश्य इस बात को निर्धारित करता है: अर्थात् यीशु के जीवन का एक विश्वसनीय ऐतिहासिक वृतांत लिखना, जो मसीही संदेश की सत्यता की पुष्टि करे।

इस औपचारिक साहित्यिक परिचय के बाद, लेखन की शैली नाटकीय रूप से परिवर्तित हो जाती है। लूका ने यीशु के जन्म का वर्णन (1:5–2:51) यहूदियों के तरीके से किया है, जिससे यूनानी पुराने नियम के पाठक परिचित हैं। यह जन्म वृतांत स्पष्ट रीति से सुसमाचार के यहूदी मूल को दर्शाता है और उन विषयों का परिचय देता है, जो लूका और प्रेरितों के काम के बाकी हिस्सों में विकसित हुए हैं।

मत्ती और मरकुस के समान, लूका ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले (3:1–20), यीशु के बपतिस्मे (3:21–22), यीशु की परीक्षा (4:1–13), तथा गलील और उसके आसपास उसकी सेवकाई के विवरणों (4:14–9:50) द्वारा यीशु की सार्वजनिक सेवकाई का परिचय दिया। अपने वचनों और कार्यों में राज्य के अधिकार को प्रदर्शित करते हुए, यीशु ने परमेश्वर के राज्य का प्रचार किया, अधिकार के साथ उपदेश दिए, बीमारों को चंगा किया, और दुष्टात्माओं को निकाला। मत्ती और मरकुस के समान, पतरस का यह स्वीकार करना कि यीशु ही मसीहा है, तथा उसके बाद यीशु का यह समझाना कि अवश्य है कि मसीह यरूशलेम में दुःख उठाए और मार डाल जाए, यीशु की गलील की सेवकाई की पराकाष्ठा थे (9:18–22)। इसके बाद यीशु अपनी इस सेवकाई को पूरा करने यरूशलेम की ओर चल पड़े (9:51–19:44)। इस यात्रा वृतांत में—जो लूका के सुसमाचार की सबसे विशिष्ट संरचनात्मक विशेषता है—लेखक, यीशु के कई प्रिय वृतांतों और दृष्टान्तों का वर्णन करता है: अच्छा सामरी, उड़ाऊ पुत्र, धनवान व्यक्ति और लाज़र, मार्था और मरियम का वृतांत, और जक्कई की घटना। इस खंड की केन्द्रीय विषयवस्तु परमेश्वर का खोए हुओं के प्रति प्रेम तथा यीशु की पापियों, कंगालों, और बहिष्कृत लोगों के प्रति सेवकाई है। सम्पूर्ण सुसमाचार की विषयवस्तु जक्कई

की घटना के अंत में बताई गई है: "मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है" (19:10)।

वृतांत की पराकाष्ठा यीशु का पकड़वाया जाना, उस पर मुक़दमा चलाया जाना, और उसका क्रूस पर चढ़ाया जाना है (22:1–23:56)। यीशु का निरपराध होना लूका में क्रूस पर चढ़ाए जाने की केन्द्रीय विषयवस्तु है। यीशु को एक धर्मी दुःख उठाने वाले परमेश्वर के दास के रूप में दर्शाया गया है (देखें यशा 52:13–53:12)। यीशु की मृत्यु पर, क्रूस के नीचे खड़ा रोमी सूबेदार बोल उठा "निश्चय यह मनुष्य धर्मी था।" (लूका 23:47)।

यीशु के पुनरुत्थान के साथ वृतांत समाप्त होता है (24:1–12)। यहाँ, इम्माऊस के मार्ग पर चेलों का विवरण, लूका का सबसे विशिष्ट योगदान है (24:13–35)। जब वह दो निराश चेलों के साथ चल रहा था, जिन्होंने उसे पहचाना नहीं था, तब यीशु ने उन्हे सिखाया कि उसकी मृत्यु कोई असफलता नहीं, परन्तु पुराने नियम की प्रतिज्ञाओं का पूर्ण होना था। सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र ने इस छुटकारे की घटना की प्रत्याशा की थी (24:25–27)। पुस्तक स्वर्ग पर उठा लिए जाने के संक्षिप्त विवरण के साथ समाप्त होती है (24:50–53), जिसका और अधिक विस्तार से वर्णन प्रेरितों के काम की पुस्तक में किया गया है (प्रेरि 1:1–11)।

संरचनात्मक रूप से लूका, मरकुस की मूल रूपरेखा का अनुसरण करता है, जो कि गलील की सेवकाई के बाद यरूशलेम की यात्रा और वहाँ यीशु की सेवकाई की पराकाष्ठा है। इनमें प्रमुख भिन्नताएं हैं: (1) मत्ती के समान, लूका ने जन्म वृतांत से आरंभ किया है, जो इस रचना के विषयगत परिचय के रूप में उपयुक्त है (लूका 1:1–2:52); (2) लूका ने गलील की सेवकाई के मरकुस के विवरण का एक प्रमुख भाग छोड़ दिया है, जिसे प्रायः उसकी "सबसे बड़ी चूक" कहते हैं (मरकुस 6:45–8:26); और (3) लूका ने यरूशलेम की यात्रा के मरकुस के एक अध्याय के विवरण को (मरकुस 10:1–52) दस अध्यायों में (लूका 9:51–19:44) विस्तारित कर दिया है और इसमें अधिक मात्रा में यीशु की शिक्षाओं और उसकी इस्राएल के बहिष्कृत लोगों के प्रति की गई सेवकाई को सम्मिलित किया है।

लूका साहित्य के रूप में

लूका के सुसमाचार को उसके दूसरे भाग, प्रेरितों के काम की पुस्तक के साथ पढ़ना और उसके साथ उसकी व्याख्या करनी चाहिए। लूका और प्रेरितों के काम एक ही लेखक (लूका) की एक रचना के दो भाग हैं। दोनों, एक साहित्यिक और ईश-वैज्ञानिक-संबंधी एकता का प्रतीक हैं—जब लूका ने अपना सुसमाचार लिखा, तब प्रेरितों के काम का लेखन पहले से ही उसके मन में था। सुसमाचार में प्रस्तावित विषयों, जैसे अन्यजातियों का उद्धार, का वृतांत समापन प्रेरितों के काम की पुस्तक में होता है। विद्वान प्रायः इस एकमात्र द्वि-भागीय रचना को "लूका–प्रेरितों के काम" कहकर संदर्भित करते हैं।

लूका का लिखने का उद्देश्य उसके सुसमाचार को, अन्य तीनों सुसमाचारों के समान, एक अद्वितीय दृष्टिकोण और महत्व देता है, जिसे लूका के सुसमाचार को मसीह के जीवन के एक भिन्न विवरण के रूप में पढ़कर ही बेहतर रूप से समझा जा सकता है। हालाँकि, यह अलग-अलग सुसमाचारों के विवरणों की तुलना करने के लिए भी लाभदायक है।

लेखक

हालाँकि, सभी सुसमाचार, वास्तव में, अनाम हैं (उनके लेखक स्वयं का नाम नहीं बताते), लूका– प्रेरितों के काम के लेखक को लूका, एक चिकित्सक और प्रेरित पौलुस का कभी-कभी का सहयोगी, के रूप में सरलता से पहचाना जा सकता है। प्रेरितों के काम में अनेक व्यक्तिवाचक सर्वनाम वाले, बहुवचन खंडों में ("हम" वाले भागों में), लेखक ने स्वयं को पौलुस की सेवकाई की गतिविधियों में एक भागीदार के रूप में वर्णित किया है (प्रेरि 16:10–17; 20:5–17; 21:1–18; 27:1–28:16)। लूका एक अन्यजातीय था (कुलु 4:11–14), और उसकी एक केन्द्रीय विषयवस्तु यह है कि परमेश्वर का दिया उद्धार अन्यजातियों के साथ-साथ यहूदियों के लिए भी है।

ऐसा प्रतीत होता है कि लूका मसीह में विश्वास में प्रेरित पौलुस की सेवकाई द्वारा आया। यद्यपि वह यीशु की सांसारिक सेवकाई के समय में उपस्थित नहीं था, वह एक सतर्क और दक्ष इतिहासकार था। अपनी दर्ज की घटनाओं की गहन जाँच करते समय उसने प्रत्यक्षदर्शी विवरणों और लिखित तथा मौखिक स्रोतों की सहायता ली। उसके लिखने का उद्देश्य यह था "कि तू यह जान ले, कि वे बातें जिनकी तूने शिक्षा पाई है, कैसी अटल हैं" (लूका 1:4)।

लेखन प्रयोजन और घटनास्थल

लेखन का वास्तविक स्थान अनिश्चित है, किन्तु रोम, इफिसुस, कैसरिया, और अखाया (दक्षिणी यूनान) यह सभी प्रस्तावित हैं। इसकी तिथि भी अनिश्चित है। इसकी दो सबसे आम धरणाएं यह हैं कि इसे किसी पहले की तिथि, 59–63 ई. सन्. , या किसी बाद की तिथि, 70–90 ई. सन्. में लिखा गया। पहले की तिथि का संकेत प्रेरितों के काम के अंत से मिलता है, जब पौलुस जीवित था और दो वर्षों से रोम के बंदीगृह में था (लगभग 60 ई. सन्. के आरंभ में)। यदि सुसमाचार को प्रेरितों के काम से पहले लिखा गया था, तो उसके इस कारावास से कुछ ही समय पहले या उसके दौरान की तिथि में लिखे होने की संभावना है (59–63ई. सन्.)। एक बाद की तिथि, 70 ई. सन्. के बाद, उन लोगों द्वारा प्रस्तावित की गई है, जिनका यह मानना है कि लूका ने मरकुस के सुसमाचार का अपने स्रोतों के रूप में उपयोग किया और यह कि मरकुस 60 के दशक

के अंत में, 66–70 ई. सन्. के यहूदी युद्ध से ठीक पहले या उसके समय में लिखा गया था (देखें मरकुस 13:14)।

प्रापक

लूका ने अपने काम थियुफिलुस ("परमेश्वर से प्रेम करने वाला") नाम के एक व्यक्ति को संबोधित किए, संभवतः उसको जिसने इतनी लंबी पुस्तक पर शोध करने और उसे लिखने के महंगे कार्य को प्रायोजित किया था। थियुफिलुस प्रश्न करने वाला एक अविश्वासी रहा होगा, किन्तु अधिक संभावना है कि वह एक विश्वासी था, जो मसीही विश्वास की उत्पत्ति के संबंध में और अधिक निर्देश चाहता था। व्यक्तिगत सम्बोधन एक समर्पण के समान है। लूका–प्रेरितों के काम संभवतः मसीही पाठकों के एक बड़े समूह के लिए भी था, जो मुख्यतः अन्यजातीय मसीहियों से बना था, किन्तु कुछ यहूदी मसीहियों से भी। ये विश्वासी इस बात की पुष्टि और आश्वासन चाह रहे थे कि कई यहूदियों द्वारा यीशु को अस्वीकार करने के बाद भी, उद्धार देने की परमेश्वर की योजना अब भी जारी थी। लूका इसकी पुष्टि कर रहा था कि कलीसिया, जो उन यहूदियों और अन्यजातियों दोनों से मिलकर बनी है, जिन्होंने यीशु को मसीहा के रूप में स्वीकार किया है, और वर्तमान युग में परमेश्वर के वास्तविक लोगों का प्रतिनिधित्व करती है।

अर्थ तथा संदेश

लूका–प्रेरितों के काम का वृतांत सकारात्मक रूप से पुष्टि करता है (1) कि यीशु ही वह मसीह है, जिसकी प्रतिज्ञा पुराने नियम के शास्त्रों में की गई थी; (2) कि क्रूस पर उसकी मृत्यु ने इस दावे को नकारा नहीं, क्योंकि मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान की भविष्यद्वाणी हमेशा से ही पवित्रशास्त्र में की गई थी (लूका 24:26, 46); (3) कि अन्यजातियों में सेवकाई परमेश्वर के आत्मा द्वारा आरंभ की हुई थी, जिसकी भविष्यद्वाणी पवित्रशास्त्र में की गई थी; और इन अंत के दिनों में सम्पूर्ण संसार को उद्धार देने की परमेश्वर की योजना का हिस्सा थी; और यह (4) कि यहूदी और अन्यजाति जिनसे मिलकर कलीसिया बनी है, परमेश्वर के लोग हैं। लूका के सुसमाचार की केन्द्रीय विषयवस्तु यह है कि पवित्रशास्त्र में प्रतिज्ञा किया गया, परमेश्वर का उद्धार, यीशु मसीह के जीवन, मृत्यु, और पुनरुत्थान में पूर्ण होता है।

एक ऐतिहासिक संदेश। किस भी अन्य सुसमाचार के लेखक से अधिक, लूका यह पुष्टि करता है कि यीशु का वृतांत ऐतिहासिक है, और वह अपने पाठकों को आश्वस्त करता है कि सुसमाचार का संदेश विश्वसनीय है। वह इस पर ज़ोर देता है कि उसका विवरण विश्वसनीय प्रत्यक्षदर्शी गवाही पर आधारित है (1:1–4) और यीशु की सेवकाई को उसके समय के शासकों के संदर्भ में पूरी सावधानी से दिनांकित करता है (3:1–2)।

यीशु का चित्र। लूका द्वारा यीशु का चित्र प्रतिज्ञा और उसके पूर्ण होने के विषय को दर्शाता है। यीशु का परिचय राजा दाऊद के वंशज, प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता, मसीह के रूप में दिया गया है। उसका जन्म दाऊद के नगर, बैतलहम में हुआ, और वह दाऊद के सिंहासन पर सदा राज्य करेगा (1:32–33; 2:4, 11)। यीशु ने सैन्य शक्ति और विजय द्वारा नहीं बल्कि भविष्यद्वक्ताओं के समान दुःख उठाकर, उद्धार के कार्य को पूरा किया। वह पुराने नियम की प्रतिज्ञाओं को पूरा करते हुए, परमेश्वर के दास के रूप में मरा। अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा, यीशु संसार का उद्धारकर्ता बन गया (लूका 2:11; प्रेरि 2:36; 10:36)। उसके दास अब उसका यह उद्धार का संदेश पृथ्वी के छोर तक ले जाते हैं।

बाहर के लोगों के लिए उद्धार। लूका उन सभी के लिए उद्धार पर ज़ोर देता है, जो विश्वास करते हैं, विशेष रूप से इस्राएल के बाहर के लोगों के संदर्भ में: कंगालों, पापियों, तुच्छ समझे जाने वाले सामरियों, स्त्रियों, और अन्यजातियों।

(1) *कंगाल*/परमेश्वर का राज्य नियति में बड़ा बदलाव लाता है। परमेश्वर कंगाल और दीन को बड़ा बनाता, तथा धनवान और अहंकारी को छोटा बनाता है (लूका 1:51–55; 16:19–31)। सुसमाचार कंगालों और सताये हुओं के लिए शुभ संदेश है (4:18) क्योंकि वे परमेश्वर की आवश्यकता का सबसे अधिक आभास करते हैं (6:20–21)। यह असंभव है कि परमेश्वर के स्थान पर अपनी संपत्ति पर विश्वास करने वाले धनवान परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करें सकें (12:13–21; 18:18–30)।

(2) *पापी*/खोए हुए लोगों के लिए परमेश्वर का प्रेम यीशु के पापियों और चुंगी लेने वालों के साथ मेल-जोल से स्पष्ट प्रकट होता है। उसने महसूल लेने वाले, लेवी को भी जिसे तुच्छ समझ जाता था, अपना चेला होने के लिए बुलाया। एक महान चिकित्सक के रूप में यीशु "बीमारों" (पापियों) को चंगा करने आया, न कि "स्वस्थ" (स्व-धर्मियों को; 5:27–32)। उसने पापिनी स्त्री की सराहना की जिसने उसके पाँवों पर इतर मला, क्योंकि उसने परमेश्वर की क्षमा को पहचाना और प्रत्युतर में बहुतायत से प्रेम किया (7:36–50)। उसने फरीसियों और धर्म गुरुओं को उनकी स्व-धार्मिकता, पाखंड, और दया ना दिखाने के लिए फटकार लगाई। मंदिर में, पश्चातापी चुंगी लेने वाले को क्षमा मिल गई, जबकि स्व-धर्मी फरीसी को कोई लाभ नहीं हुआ (18:9–14)। यहाँ तक की चुंगी लेने वालों के सरदार जक्कई को भी पश्चाताप करने और परमेश्वर की ओर मुड़ने पर क्षमा मिली (19:1–10)। यीशु ने क्रूस पर पश्चातापी कुकर्मी को क्षमा किया और उसे स्वर्गलोक में स्थान दिया (23:39–43)। और यीशु के दृष्टांत भी इस ही विषयवस्तु को व्यक्त करते हैं—उदाहरण के लिए, पिता ने अपने उड़ाऊ पुत्र को लौटकर उसके पास आने पर क्षमा कर दिया (15:11–32)। सम्पूर्ण सुसमाचार में यही संदेश है कि आने वाला परमेश्वर का राज्य उन सभी के लिए, जो पश्चाताप करते और विश्वास करते हैं, क्षमा लेकर आएगा।

अर्थ तथा संदेश

(3) *सामरी।* सामरी तुच्छ समझे जाने वाले बहिष्कृत लोग थे, किन्तु लूका में, यीशु एक सामरी की, जिसे कोढ़ से चंगाई मिली थी, परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता के लिए सराहना करता है (17:11–19)। और यीशु ने अच्छे सामरी का दृष्टांत भी सुनाया, जिसमें एक तुच्छ समझा जाने वाला सामरी, एक घायल यहूदी का एकमात्र सच्चा पड़ोसी बना (10:29–37)। परमेश्वर का उद्धार किसी की जातीय पहचान या सामाजिक स्तर पर नहीं, बल्कि एक पश्चातापी हृदय और परमेश्वर तथा औरों के प्रति प्रेम के जीवन पर निर्भर करता है।

(4) *स्त्रियाँ।* प्रथम-शताब्दी की संस्कृति में, स्त्रियों को निचले स्तर का समझा जाता था, किन्तु यीशु ने उन्हें परमेश्वर के राज्य में एक आदर का स्थान दिया। लूका का सुसमाचार स्त्रियों को एक विशेष प्रमुख स्थान देता है और तेरह ऐसी स्त्रियों का उल्लेख करता है, जिनका अन्य सुसमाचारों में उल्लेख नहीं है। जन्म वृतांत को स्त्रियों (मरियम और एलीशीबा) के दृष्टिकोण से बताया गया है। केवल लूका ही उन स्त्रियों का उल्लेख करता है, जो यीशु की आर्थिक सहायता करती थीं (8:1–3)। और मरियम और मार्था के उसके वृतांत में, यीशु के पाँवों पर चेले के समान बैठ कर सीखने के लिए मरियम की सराहना की गई है (10:38–42)।

(5) *अन्यजाति।* सबसे अधिक बाहर के माने जाने वाले लोग अन्यजाति थे, और लूका इस बात पर ज़ोर देता है कि परमेश्वर के उद्धार की पहुँच उन तक भी है। यद्यपि वह इस्राएल में से उठा, यीशु "अन्यजातियों को सत्य प्रकट करने के लिए एक ज्योति होगा" (2:32), और "हर प्राणी [ ] परमेश्वर के उद्धार को देखेगा" (3:4–6; यशा 40:5)। जबकि मत्ती में दी गई वंशावली (मत्ती 1:1–17) इस्राएलियों के पिता, अब्राहम से आरंभ करने के द्वारा यीशु के यहूदी मूल से होने पर ज़ोर देता है, लूका में दी गई वंशावली समस्त मानवजाति के पिता, आदम तक जाती है (लूका 3:23–38)। नासरत में दिए गए अपने उपदेश में, यीशु ने घोषणा की, कि परमेश्वर ने हमेशा ही अन्यजातियों के प्रति अपने अनुग्रह को प्रदर्शित किया (4:24–27)। लूका का संदेश है कि परमेश्वर सभी स्थानों के सभी लोगों से प्रेम करता है और चाहता है कि जो खोए हुए हैं, वे पा लिए जाएँ (15:1–32; 19:10)।

इस्राएल में बहुतेरों के द्वारा अस्वीकार किया जाना। अन्यजातियों और अन्य बाहर के लोगों के सम्मिलित किए जाने का अंधकारमय पक्ष यह है कि यीशु के संदेश को इस्राएल में बहुतेरों ने अस्वीकार किया। नासरत में, जब उसने घोषणा की, कि परमेश्वर ने बीते समयों में अन्यजातियों को आशीष दी थी, तो लोग क्रोधित होकर उसे मार डालने के लिए खड़े हो गए (4:28–30)। इस घटना ने उसके ही लोगों के द्वारा यीशु के तिरस्कार का आरंभ किया और यहूदियों द्वारा कलीसिया के विरोध का पूर्वाभास दिया (जैसा की प्रेरितों के काम में वर्णित है)। यरूशलेम ने अपने मसीहा को अस्वीकार कर दिया और इस कारण परमेश्वर के न्याय के नीचे आकर खड़ा हो गया (लूका 13:33–35; 19:41–44)। और यही पद्धति प्रेरितों के काम में जारी रहता है। हालाँकि इस्राएल में बहुतेरों ने सुसमाचार पर विश्वास किया, किन्तु उनसे कहीं अधिक ने उसे अस्वीकार किया। इस्राएल विभाजित था, और सुसमाचार बाहर अन्यजातियों के पास चला गया। लूका ज़ोर देता है कि इस से सुसमाचार संदेश का इन्कार नहीं हुआ; इस्राएल के द्वारा सुसमाचार को अस्वीकार किए जाने की भविष्यद्वाणी पुराने नियम के पवित्र शास्त्रों में की गई थी और यह इस्राएल के ढीठ तथा कठोर मन का होने के इतिहास का जारी रहना था (11:29–32, 47–51; 13:34–35; 19:41–44; 23:27–31; प्रेरि 13:46; 28:25–28; साथ ही देखें रोमि 9–11)।